जीवन दर्शन और प्रदर्शन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीवन दर्शन और प्रदर्शन दोनों विरोधी हैं। प्रदर्शन का अर्थ है– दिखावा करना, कृत्रिमता करना। हर वस्तु के दो पक्ष होते हैं। प्रदर्शन यदि प्रतिरोध पैदा करे तो वह ठीक नहीं है। अच्छाई का प्रदर्शन, गुणों का प्रदर्शन जीवन दर्शन बन जाता है। किन्तु बनावटी जीवन दर्शन प्रदर्शन बन जाता है। किसी को दिखाने के लिए यदि प्रदर्शन किया जाता हैं तो वह प्रदर्शन कहलाता है। आजकल समाज में प्रदर्शन की प्रवृत्ति बढ़ रही है। लोग अपने बच्चे और बच्चियों के विवाह में अनावश्यक प्रदर्शन करते हुए और दूसरों को नीचा दिखाने के लिए खूब प्रदर्शन करते है। विवाह, जन्मदिन, सामाजिक उत्सवों में खूब प्रदर्शन किया जा रहा है। प्रदर्शन में केवल बुराई ही बुराई है, अच्छाई नहीं। किन्तु जब ईमानदारी, सामाजिक कार्यों, विद्यालय इत्यादि का निर्माण, परोपकार, गरीबों की सेवा की जाती है तो यह प्रदर्शन नहीं, बल्कि यह जीवन दर्शन है। अच्छा जीवन–यापन करना जीवन दर्शन है। हर व्यक्ति की दिनचर्या ठीक ढंग से होनी चाहिए। कुछ लोग सूर्योदय के पहले उठना ज्यादा पसंद करते हैं। कुछ लोग देर से जागना ज्यादा पसंद करते हैं। किन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो सूर्योदय से पहले उठना ठीक है। यदि देर से जागने वालों को सुबह उठने के लिए कहा जाये तो उनको ठीक नहीं लगता। अंग्रेजी में कहा गया हैं कि जो व्यक्ति जल्दी सोता है और जल्दी जागता है, वह स्वस्थ रहता है, बुद्धिमान रहता है और धनवान होता है। इसलिए जल्दी उठना जीवनचर्या का एक अंग होना चाहिए। प्रातः उठकर ईश्वर स्मरण, ध्यान और मन्त्रोचारण करना चाहिए। इससे रचनात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है।

नियमित दिनचर्या वाला व्यक्ति स्वस्थ और कार्यकुशल होता है। वह सोचता हैं कि मेरे द्वारा किसी भी प्राणी को दुःख न हो। स्नान, ध्यान करके ऐसा व्यक्ति अपने कार्य में लग जाता है। जो कुछ अल्पाहार नाश्ते के रूप में आता है उसे प्रसाद समझकर के ग्रहण कर लेता है। प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण किया गया आहार तन, मन को स्वस्थ रखता है। जीवन दर्शन में

अनुशासन, परोपकार, कार्य करने की शक्ति आनी चाहिए। जो व्यक्ति अपने परिवार में विधायक भाव रखता है वह कुशल संचालक होता है। सभी व्यक्तियों का जीवन दर्शन अलग–अलग होता है। राजनेता, अधिकारी, कर्मचारी, कृषक, दुकानदार सबका अपना जीवन दर्शन है। सभी को सकारात्मक दृष्टि रखनी चाहिए। शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य को सुधारने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्य जहां भी हो वह अपना मानकर यदि कार्य करता है तो विकास होता है। सभी के प्रति मंगलकामना की भावना होनी चाहिए। किसी के साथ मनमुटाव नहीं होना चाहिए। परिवार में भी इसी प्रक्रिया को अपनाना चाहिए। एक पिता के यदि चार बेटे है तो चारों को समान नजरियें से देखना चाहिए। यदि दृष्टि में अन्तर पड़ता है तो पुत्रों में भी मनमुटाव हो जाता है। इसलिए पुत्रों में संस्कार डालकर सदाचारी बनाने का प्रयास करना चाहिए। यदि संस्कार नहीं है तो पिता के द्वारा कमाई गयी सब धन सम्पत्ति व्यर्थ हो जाती है। पुत्र जीवनभर सम्पत्ति के लिए ही आपस में लड़ मरते है। यह संसार एक रंगमंच है। सभी प्राणी यहां पर अपना रोल अदा कर चले जाते हैं। दुनिया मनुष्य कार्यों को याद करती है। इस संसार में जितने भी प्राणियों ने जन्म लिया है, एक न एक दिन सबको मरना है। किन्तु उस व्यक्ति का जीवन दर्शन लोगों के सामने उदाहरण बन जाता है, जिसने समाज को कुछ दिया है। इसलिए मनुष्य का प्रयास यह होना चाहिए कि वह समाज के लिए जिये। मानवेतर जितने भी प्राणी हैं वे सभी केवल अपना पेट पालते हैं। मनुष्य में ही वह संज्ञा है जो हेय और उपादेय को जानती है। स्वार्थ हेय है और परार्थ उपादेय है। महापुरुषों का जीवन दर्शन हमारे लिए अनुकरणीय है। स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजाराम मोहनराय, विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ टेगोर, महात्मा गांधी आदि महापुरुषों का जीवन दर्शन समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

प्रकृति के साथ तालमेल बैठाना, प्रकृति के साथ जीना, प्रकृति का संरक्षण करना, मानव मात्र के साथ मैत्री का व्यवहार करना, सभी जीवों को अपने समान मानना, और सर्वभूत हित चिन्तन करना, बड़ों का सम्मान करना आदर्श जीवन दर्शन के मूलमंत्र है। चौरासी लाख जीव योनियों में मानव सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए मनुष्य को ऐसा आचरण करना चाहिए कि उसका सब अनुकरण करें। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पंचमहाभूतों की पूजा हमारे देश में अनादिकाल

से हो रही है। हमारे पूर्वजों को यह ज्ञात था कि यदि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ किया जायेगा तो प्रकृति रूष्ट होकर के मानव को उसका दंड अवश्य देगी। प्रकृति के जितने भी अवयव है वे सभी प्रकृति के साथ तालमेल बैठाकर जीवन–यापन करते हैं। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो प्रकृति के प्रतिकूल आचरण करता है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की सभ्यता में प्रकृति पूजा के चिह्न मिले हैं। प्रकृति के जितने भी उपादान हैं, वे सभी समान बर्ताव करते हैं। रात दिन का होना, सूर्य और चन्द्रमा का अपने गति के अनुसार पथ पर चलना, षड ऋतुओं का होना और जलवायु सम्बन्धी परिवर्तन ये सब क्रियाएं प्रकृति अपने आप करती रहती है। रात और दिन की रचना के पीछे सिद्धांत यह है कि दिन में मनुष्य काम करे और रात में शयन करे। यह मानव के लिए है। जीवन दर्शन में प्रदर्शन के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। जो कुछ भी है वह साफ सुथरा और खुली किताब की तरह होना चाहिए।